

दैनिक

RNI N.UPHIN/2007/27090

नगर छाया

आप की आवाज़....

मृदा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अमर भारती ब्यूरो।

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ विजेन्द्र सिंह के निर्देश के क्रम में सोमवार को कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर मिशन जीवन अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ग्राम सहतावनपुरवा विकास खंड मैथा में किया गया।

इस अवसर पर वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया कि मिशन जीवन दुनिया में तेजी से बदलते जलवायु परिवर्तन को रोकने का एक वैश्विक कैम्पेन है। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया हमारे देश में पिछले वर्षों में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटैश का अनुपात 9 : 3 : 1 रहा है, जो बहुत असंतुलित है। मुख्य रूप से फसल में नाइट्रोजन प्रदान करने वाले रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते उपयोग



से मिट्टी में कुछ गौण और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो रही है, जिससे मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वहीं, फसलों की गुणवत्ता और पैदावार भी घट रही है।

कार्यक्रम में बोलते हुए उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण सिंह ने कहा की कीटनाशकों और संयंत्र नियामकों के अत्यधिक और असंतुलित उपयोग से मिट्टी की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि आज कल कृषि में पशुधन की संख्या कम हो रही है। पहले, खेती बैलों पर निर्भर थी। खेती के मशीनीकरण के कारण

पूरे गाँव में बैलों की जोड़ी नहीं है। जिसके कारण खेतों में गोबर की खाद और पशुओं के उत्सर्जन का बहुत कम उपयोग किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी में जीवाणु पदार्थ की कमी होती है। अंत में मानव स्वास्थ्य पर कृषि रसायनों के प्रयोग पर जागरूक करते डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कृषि रसायन की नुकसान करने या रोगी करने की क्षमता उसकी विषाक्तता कहलाती है। यह दो प्रकार की होती है: तीव्र विषाक्तता और दीर्घकालिक विषाक्तता। तीव्र विषाक्तता किसी जीव को एक अल्प या सीमित समय में नुकसान तथा रोगी कर सकती है।

राष्ट्रीय स्वरूप

aswaroop.in

टी20 में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर हूं : कोहली 10

आलायकारा शामिल हुए।

मृदा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ विजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में सोमवार को कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर मिशन जीवन अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ग्राम सहतावनपुरवा विकास खंड मैथा में किया गया। इस अवसर पर वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया कि मिशन जीवन दुनिया में तेजी से बदलते जलवायु परिवर्तन को रोकने का एक वैश्विक कैंपेन है। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया हमारे देश में पिछले वर्षों में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटैश का अनुपात 9:3:1 रहा है, जो बहुत असंतुलित है। मुख्य रूप से फसल में नाइट्रोजन प्रदान करने वाले रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते उपयोग से मिट्टी में कुछ गौण और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो रही है, जिससे मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वहीं, फसलों की गुणवत्ता और पैदावार भी घट रही

है। कार्यक्रम में बोलते हुए उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण सिंह ने कहा की कीटनाशकों और संयंत्र नियामकों के अत्यधिक और असंतुलित उपयोग से मिट्टी की उर्वरता पर

कल कृषि में पशुधन की संख्या कम हो रही है। पहले, खेती बैलों पर निर्भर थी। खेती के मशीनीकरण के कारण पूरे गाँव में बैलों की जोड़ी नहीं है। जिसके कारण खेतों में गोबर



प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि आज

की खाद और पशुओं के उत्सर्जन का बहुत कम उपयोग किया जा रहा है, जिसके

परिणामस्वरूप मिट्टी में जीवाणु पदार्थ की कमी होती है। अंत में मानव स्वास्थ्य पर कृषि रसायनों के प्रयोग पर जागरूक करते डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कृषि रसायन की नुकसान करने या रोगी करने की क्षमता उसकी विषाक्तता कहलाती है। यह दो प्रकार की होती है: तीव्र विषाक्तता और दीर्घकालिक विषाक्तता। तीव्र विषाक्तता किसी जीव को एक अल्प या सीमित समय में नुकसान तथा रोगी कर सकती है। दीर्घकालिक विषाक्तता किसी रसायन या कीटनाशक के लंबे समय तक छोटे खुराकों के ग्रहण करने से होती है। कीटनाशक की विषाक्तता की जानकारी लेबल के माध्यम से देना सभी निर्माताओं के लिए अनिवार्य है। विषाक्तता में चार अलग-अलग रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। लाल, पीले, नीले एवं हरे रंग का लेबल क्रमशः अत्यंत विषाक्तता, अत्यधिक विषाक्तता, मध्यम विषाक्तता एवं न्यूनतम विषाक्तता का प्रतिनिधित्व करता है। कार्यक्रम में छुन्ना सिंह समेत 50 कृषकों ने प्रतिभाग किया।



तीन दशक में पहली बार मई में सबसे ज्यादा पश्चिमी विक्षोभ



खास

■ मोहम्मद आसिम सिद्दीकी

कानपुर। तीन दशक में पहली बार मई गरजा और बरसा है। इस महीने सबसे ज्यादा पश्चिमी विक्षोभ आए और आगे भी संभावित हैं। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक ताजा विक्षोभ की शुरुआत मंगलवार रात से होने की संभावना है जिसका असर 28 मई तक जारी रहेगा। आंकड़ों के मुताबिक 30 साल में मई में कभी बादल नहीं गरजे। जून में जरूर इसका औसत 3.3 दिन प्रति वर्ष-प्रति माह रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने 1991 से लेकर 2020 तक मौसम से जुड़ी एक्सट्रीम कंडीशन (चरम स्थिति) के आंकड़े जारी किए हैं। इसके अनुसार मई में औसत (माध्य-

सबसे ज्यादा गरज-चमक अगस्त में

आईएमडी के अनुसार कानपुर में पिछले तीन दशकों की बात करें तो सर्वाधिक गरज-चमक अगस्त में होती है। इस माह औसतन (माध्य) 9.4 दिन बादल गरजते हैं। जून में अपेक्षाकृत गरज-चमक के दिवस अधिक रहे हैं इनका माध्य 4.4 रहा है। यह माध्य जुलाई में 5.8, सितंबर में 6.4, अक्टूबर में 0.8, नवंबर में 0.8 और दिसंबर में 0.8 रहता है। 1971 के बाद की बात करें तो इस साल मई में सर्वाधिक 63.4 मिमी वर्षा रिकॉर्ड की जा चुकी है। सीएसए के मौसम विज्ञानी डॉ. एसएन सुनील पांडेय के मुताबिक पिछले पांच दशकों में भी मई का ऐसा नेचर नहीं रहा है। खूब पश्चिमी विक्षोभ आ रहे हैं। मंगलवार से नए पश्चिमी विक्षोभ का असर भी दिखने लगेगा जो 28 मई तक खिंच सकता है।

मीन) तापमान इन तीन दशकों में 40.3 और न्यूनतम 25.4 डिग्री सेल्सियस रहा है। मई में माध्य यानी मीन वारिश के दिवसों की संख्या मात्र 1.4 है। तीन दशकों में मई में वारिश का औसत मात्र 10.3 मिमी रहा है। कभी नहीं रही गरज-चमक: रिकॉर्ड की बात करें तो 30 साल में मई में गरज-चमक ज्यादा नहीं रही है।

आईएमडी ने इसका माध्य मात्र 1.6 निकाला है। इसका अर्थ यह है केवल अपवाद के तौर पर ही गरज-चमक रही है। ओलावृष्टि, कोहरा और तूफान कभी नहीं रहा। पर यह बातें वर्ष 2020 तक की हैं। 2023 में मई महीने में ओलावृष्टि भी हुई और तूफानी हवाएं और वारिश का सामना भी करना पड़ा।

तापमान में उतार-चढ़ाव से गिरने-फटने लगे फल

कानपुर। मई में तापमान के उतार-चढ़ाव और बेमौसम वारिश का असर फलों पर भी पड़ा है। कुछ फल ज्यादा प्रभावित हुए हैं। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक जब मौसम में अनिश्चितता हो जाती है तो किसान सिंचाई नहीं करते। इससे फल फटने और गिरने लगे हैं। छोटे भी होने लगे हैं। विशेषकर लीची, नींबू और आम की फसल ज्यादा प्रभावित हुई है। इस माह वारिश से तापमान सामान्य से कम बना रहा। अब तक केवल चार बार तापमान 40 या इसके ऊपर गया। इसका असर मौसमी फलों पर पड़ा। कुछ फल टूटकर गिर गए तो कुछ फट गए या रंगत बदल गई। कुछ में मिठास कम हो गई। स्वाद में भी मामूली परिवर्तन होने लगा। लीची की मिठास कम हो गई। तरबूज और खरबूजा जो देसी है वह फीका पड़ गया। हाईब्रिड पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा।

30

साल के आंकड़ों के मुताबिक मई में नहीं गरजे बादल

24

मई से आंधी-पानी की संभावना, 28 तक ऐसा मौसम रहने के असार



किसानों ने मई में मौसम में उतार व चढ़ाव के कारण सिंचाई नहीं की। इससे फलों का छोटा होना, गिरने लगना और टूटने लगना स्वाभाविक है। मिठास और स्वाद दोनों में अंतर पड़ता है। यह दिखने भी लगा है। - डॉ. विवेक त्रिपाठी, प्रोफेसर व हेड, हॉर्टिकल्चर सीएसए



मई का औसत तापमान कम हो जाने का असर फलों की फसलों पर पड़ना तय है। लीची जो शहर की है वह छोटी हो गई है। तरबूज और खरबूजा जो देसी होता है उस पर असर पड़ा है। खीरा, ककड़ी का उत्पादन प्रभावित हुआ है। - डॉ. एसएन सुनील द्विवेदी, मौसम विज्ञानी सीएसए



मिशन जीवन के अन्तर्गत मृदा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ विजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर मिशन जीवन अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ग्राम सहतावनपुरवा विकासखंड मैथा में किया गया। इस अवसर पर वैज्ञानिकों द्वारा बताया गया कि मिशन जीवन दुनिया में तेजी से दलते जलवायु परिवर्तन को रोकने का एक वैश्विक कैम्पेन है। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया हमारे देश में पिछले वर्षों में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैश का अनुपात 9:3:1 रहा है, जो बहुत असंतुलित है।



मुख्य रूप से फसल में नाइट्रोजन प्रदान करने वाले रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते उपयोग से मिट्टी में कुछ गौण और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो रही है। जिससे मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वहीं, फसलों की गुणवत्ता और

पैदावार भी घट रही है। कार्यक्रम में बोलते हुए उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण सिंह ने कहा की कीटनाशकों और संयंत्र नियामकों के अत्यधिक और असंतुलित उपयोग से मिट्टी की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उपर्युक्त रसायनों के उपयोग से खरपतवार,

कीट और रोग नियंत्रित होते हैं। लेकिन जहरीले कृषि रसायन मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। जिससे मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बोला कि आजकल कृषि में पशुधन की संख्या कम हो रही है। पहले खेत बैलों पर निर्भर थी। खेती के मशीनीकरण के कारण पूरे गाँव में बैलोंकी जोड़ी नहीं है। जिसके कारण खेतों में गोबर की खाद और पशुओं के उत्सर्जन का बहुत कम उपयोग किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी में जीवाणु पदार्थ की कमीहोती है। अंत में मानव स्वास्थ्य पर कृषि रसायनों के प्रयोग पर जागरूक करते डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कृषि रसायन की नुकसान करने या

रोगी करने की क्षमता उसकी विषाक्तता कहलाती है। यह दो प्रकार की होती है: तीव्र विषाक्तता और दीर्घकालिक विषाक्तता। तीव्र विषाक्तता किसी जीव को एक अल्प या सीमित समय में नुकसान तथा रोगी कर सकती है। दीर्घकालिक विषाक्तता किसी रसायन या कीटनाशक के लंबे समय तक छोटे खुराकों के ग्रहण करने से होती है। कीटनाशक की विषाक्तता की जानकारी लेबल के माध्यम से देना सभी निर्माताओं के लिए अनिवार्य है। विषाक्तता में चार अलग-अलग रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। लाल, पीले, नीले एवं हरे रंग का लेबल क्रमशः अत्यंत विषाक्तता, अत्यधिक विषाक्तता, मध्यम विषाक्तता एवं न्यूनतम विषाक्तता का प्रतिनिधित्व करता है। कार्यक्रम में छुत्रा सिंह समेत 50 कृषकों ने प्रतिभाग किया।